शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 अक्टूबर 2014

'उखड़े हुए लोग' उपन्यास में मध्यमवर्ग

नरबू ड्रेमा (शोधार्थी)
हिन्दी विभाग
वनस्थली विद्यापीठ
राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

प्रेमचन्दोत्तर काल में राजनैतिक, सामाजिक तथा आर्थिक दृष्टि से हुए परिवर्तनों ने इस काल के लेखकों को अभूतपूर्व सामग्री प्रदान की। इस युग में स्वाधीनता आंदोलन अपनी चरम सीमा तक पहुँच गया था। बच्चे, बूढे, नारी, पुरूष सभी की एक मात्र इच्छा - स्वतंत्रता की प्राप्ति थी। इसके लिए सभी तन-मन-धन से आंदोलन में कूद पड़े। 15 अगस्त, 1947 को सबका सपना साकार हुआ। देश का पूरा नक्शा नए सिरे से सामने आया। रचनाकारों को नई विषय सामग्री प्राप्त हुई। हिन्दी उपन्यास साहित्य में राजेन्द्र यादव का आगमन इसी दौर में हुआ। साहित्यकार अपने युग की उपज होता है। उसके रचनात्मक व्यक्तित्व का निर्माण उसके युग की परिस्थितियाँ करती हैं। राजेन्द्र यादव के रचनात्मक व्यक्तित्व का प्रस्फुटन देश की उथल-पुथल के बीच हुआ। उनका उपन्यास साहित्य इसी उथल-पुथल की उपज है। उनके उपन्यासों के केन्द्र में मध्यवर्गीय जीवन व उसकी समस्याएँ हैं।

उखड़े हुए लोग में मध्य वर्ग

राजेन्द्र यादव का 'उखड़े हुए लोग' उपन्यास वर्तमान सामाजिक, आर्थिक तथा राजनैतिक परिवेश के संदर्भ में उखड़े हुए लोगों की दर्दनाक जिन्दगी की दास्तान है। इसमें परिस्थितियों के प्रति विद्रोह कर अपनी तस्वीर खुद बनाने के लिए निकल पड़ी मध्यवर्ग की नई पीढ़ी का चित्रण है। उपन्यास के नायक शरद और नायिका जया का विवाह किए बिना सम्मिलित जिन्दगी बिताना मध्यवर्ग के प्रगतिशील विचारों का द्योतक है। लेखक ने इसमें मध्यवर्ग की नई पीढ़ी और उसकी परम्परागत विवाह पद्धति को तोड़ने की प्रवृत्ति को प्रकट कर अंतर्जातीय विवाह के प्रति सहानुभूति ही नहीं जताई बल्कि उसका समर्थन भी किया है। साथ ही जिन्दगी बसाने के लिए निकल पड़े मध्यवर्ग के प्रगतिशील तबके की वर्तमान स्थितियों में उखड़ी हुई जिन्दगी को भी रूपायित किया है।

विवाह किए बिना शरद और जया का पति-पत्नी के रूप में साथ रहना मध्यवर्गीय समाज में उभरी क्रांतिकारी विचारधारा का परिचायक है। शरद विवाह को परिभाषित करता हुआ कहता है "प्रकृति को अनिवार्य मानकर दो इकाईयों के सामूहिक जीवन की सामाजिक स्वीकृति का नाम विवाह है।" वह वैवाहिक रस्मों पर चोट करते हुए कहता है "विवाह के संबंध में मैं हर टीम-टाम के विरूद्ध हूँ सामन्तों की तरह फौज-फाँटा लेकर लड़की वालों के घर पर चढ़ दौड़ने और चैथ वसूलने के ऐतिहासिक दौर से हम लोग गुजर आये हैं। उसकी नकल की भी जरूरत नहीं रह गई है।..आग जलाकर एक मृत और साधारणतः दुर्बोध भाषा में, कुछ जाहिलों को बीच में डालकर

अर्थहीन वाक्यों को दुहरा-भर लेना, हर दर्जे की जहालत और अंधविश्वास है।'' इस तरह राजेन्द्र यादव ने शरद के माध्यम से प्रेम-विवाह का समर्थन किया है। ताकि सामाजिक रूढ़ियों का अन्त हो सके तथा वैवाहिक रूढ़ियाँ और कुरूपताएँ समाज में फैली हुई है वे समाप्त हो।

मध्यवर्ग की एक सबसे बड़ी खूबी यह होती है कि इस वर्ग के लोग जमीन से जुड़े हुए रहते हैं और चारित्रिक दृष्टि से सबल और अपने वचन के पक्के होते हैं। 'उखड़े हुए लोग' उपन्यास के पात्रों के माध्यम से लेखक ने मध्यवर्ग की इस मानसिकता को उजागर करते हुए लिखा है कि ''मैंने मनुष्य की बुरी से बुरी स्थिति देखी है और अच्छी से अच्छी लेकिन एक सिद्धान्त मैंने हमेशा अपनाया। विचार हमेशा ऊँचे रखो और माथा नीचा। यही चीज है जो चरित्र को बनाती है और चरित्र वह चीज है, जो आदमी को लाख मुसीबतों से भी बचाता रहा है। मानना पड़ता है कि चरित्र में एक अद्भुत शक्ति है, बड़ा बल है, कोई आँख नहीं मिला सकता। वरना जिन गड्ढ़ों में मैं रहा हूँ, वहाँ से उभरता तो अंसभव समझिए।''

'उखड़े हुए लोग' के शरद ने जहाँ विवाह के सारे परम्परागत मानदण्डों को त्याकर नए आदर्श प्रतिष्ठापित किए और जया ने उसका पूरा साथ दिया है। परन्तु, राजनेता देशबंधु के 'स्वदेश महल' में आकर वे जीवन की यथार्थता से परिचित होते हैं। वहाँ उन्हें उखड़े हुए लोगों की दर्दनाक दृष्टि देखने को मिलती है। वे खुद देशबंधु के शोषण का शिकार हो जाते हैं और अंत में वहाँ से भाग जाते हैं। आजादी के बाद देशवासियों ने सुखद सपने देखे थे किन्तु देशबंधु जैसे राजनेताओं के हाथों में देश की बागडोर चली गई, और लोगों के वे सुनहरे स्वप्न भंग हो गये। देश सेवा के नाम पर जनता का शोषण करने वाले, खद्दर की आड़ में वासना की तृप्ति के लिए अनेक स्त्रियों से शरीर संबंध रखने वाले देशबंधु का यथार्थ चरित्र लेखक ने प्रतिनिधि रूप में किया है ''उसके बिजनेस का वह घृणित रूप है जिसे बहुत कम लोग जानते हैं - इसका नाम है 'होटल डी पैरिस'। सैंकड़ों उसके एजेन्ट हैं गाँवों से, शहरों से, भूले भटके या बहका कर लाये हुए 'शिकार' यहाँ रखते हैं।''

इसी वजह से कुछ लोग इसे राजनैतिक उपन्यास मानते हैं। किन्तु उपन्यास में शरद व जया के अलावा, सूरज, प्रोफेसर कपिल, केशव, कवि चम्पक जैसे कई मध्यवर्गीय पात्रों की जीवनानुभूति में सारा समाज समाया हुआ है। पूंजीवादी अर्थव्यवस्था ने इन्हें जमने से पहले ही उखाड़ दिया है। शरद व जया का पलायन व्यक्तिगत नहीं है बल्कि उसमें आधुनिक शिक्षा प्राप्त प्रगतिशील तबके की बेबसी भी प्रतिबिम्बित होती है। यशपाल ने देश-विभाजन की विभीषिका तथा विषम परिस्थितियों से ग्रस्त मध्यवर्ग के जीवन का यथार्थ चित्रण किया है। राजेन्द्र यादव का 'उखड़े हुए लोग' उपन्यास इसके आगे की कड़ी प्रतीत होती है। स्वतंत्र भारतीय समाज की जर्जरित रूढ़ि-परम्पराओं की दीवारों को तोड़ने के लिए निकल पड़े शरद-जया को पँूजीवादी अर्थव्यवस्था एवं सामाजिक विषमताओं ने जमने से पहले किस तरह उखाड़कर फेंक दिया इसका जीता जागता चित्रण 'उखड़े हुए लोग' उपन्यास में देखने को मिलता है।

निष्कर्ष

इस प्रकार प्रस्तुत उपन्यास अत्यन्त सार्थक है। उपन्यास का हर पात्र उखड़ा हुआ सा है। उनके जीवन में सुरक्षा और स्थायीपन दिखाई नहीं देता

है। सामाजिक नींव उनके लिए गतिशील है। जिससे वे अपने पैर उस पर टिका नहीं सकते हैं। जया, शरद, मायादेवी, पद्मा, सूरज, कपिल सभी परिस्थितियों से समझौता करना चाहते हैं किन्तु विवशता वश उखड़ने लगते है। इसमें ''वर्तमान सामाजिक, आर्थिक पारिवारिक एवं उससे उद्भूत जीवन कुण्ठाओं के संदर्भ में मनुष्य के बहुपक्षीय व्यक्तित्व उसकी दुर्बलताओं, उसके नवीन बौद्धिक एवं भावनागत आदर्शों और यथार्थ जीवन स्थितियों के संघर्ष से उद्भूत उसकी विवशताओं के चित्रण में लेखक ने बड़े कौशल का परिचय दिया है।''

संदर्भ ग्रन्थ

1 राजेन्द्र यादव, उखड़े हुए लोग, पृष्ठ 28
2 वही, पृष्ठ 28
3 वही, पृष्ठ 55
4 वही, पृष्ठ. 395
5 डॉ.शिवनारायण श्रीवास्तव, हिन्दी उपन्यास: प्रेमचन्दोत्तर युग, प्रयोग काल, पृष्ठ 486